मिनवा
और
डम्पुआ
के करतूत
Author: V Raghunathan
Illustrator: Roopalika

भूमिका

'मिनवा और डम्पुआ के करतूत' – हिंन्दी बाल कविताएँ चार से सात साल के बच्चों के लिए दो भागों में लिखी गई हैं। यह पहला भाग है। हर भाग में 24 कविताएँ हैं। यह कविताएँ, सन् 2006 व 2007 में मेरी सुबह की सैर के दौरान लिखी गईं, जो दो बच्चों से प्रेरित हैं (जो कि अब बड़े हो चुके हैं)।

इन कविताओं को सिर्फ इसलिए नहीं लिखा गया कि नन्हे मुन्नों को हिंदी कविताओं का नया खजाना मिल सके। इन्हें इसलिए भी लिखा गया कि हर इंसान में छिपे बच्चे को बाहर निकाला जाए। बच्चों के माता–पिता भी इन्हें पढ़ कर, फिर से बचपन में पहुँच जाएँ। मुझे पूरा विश्वास है कि यह संग्रह इस उद्देश्य को पूरा कर पाएगा। यदि कोई दक्षिण भारतीय हिंदी की बाल कविताएँ लिख रहा है, तो इससे राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा मिलेगा– यह भी किसी बोनस से कम नहीं।

मेरी सबसे अच्छी मित्र व पत्नी मीना, सुबह की सैर के वक्त मेरे साथ होती थी, इसलिए सबसे पहले उसी ने इन्हें सुना। उसने कई कविताओं के लिए नए विचार व धुन सुझाई। मैं उसका दिल से आभार प्रकट करता हूँ। मैं रूपालिका को भी धन्यवाद देना चाहूँगा, जिसने अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति से मिनवा व डम्पुआ के चित्र बनाए!

लेकिन इन सबसे ज्यादा...., मेरी होनहार एक्जीक्यूटिव असिस्टेंट सुषमा। उसने एक बार मेरी फाइल में ये कतरनें देखीं और इन्हें प्रकाशित करने का भार संभाल लिया। कविताओं को हिंदी में टाइप करने व योग्य प्रकाशक तक पहुँचाने का सारा श्रेय उसी को जाता है। उसे केवल धन्यवाद देना काफी नहीं है। मैं इस प्रकाशन के लिए उसका ऋणी हूँ।

वी. रघुनाथन
v.raghunathan@gmail.com

अनुक्रमणिका

मिनवा की बछड़ी 1
डम्पुआ खाए डांट 2
क्रिकेटर मिनवा 3
रोता डम्पुआ 4
आटो में मिनवा 5
कहे डम्पुआ 6
तालाब में मिनवा 7
आम तोड़े डम्पुआ 8
बिन बस्ते की मिनवा 9
धूप में डम्पुआ 10
साफ़ सुथरी मिनवा 11
डम्पुआ की मोच 12
धूप में मिनवा 13
घुड़सवार डम्पुआ 14
लटकी मिनवा 15
डम्पुआ के जूते 16
पेड़ पे मिनवा 17
डम्पुआ का प्रश्न 18
मिनवा के चुभ गया काँटा 19
छोटा डम्पुआ 20
मिनवा और गिलहरी 21
डम्पुआ का चश्मा 22
पत्ते पर मिनवा 23
वीर डम्पुआ 24

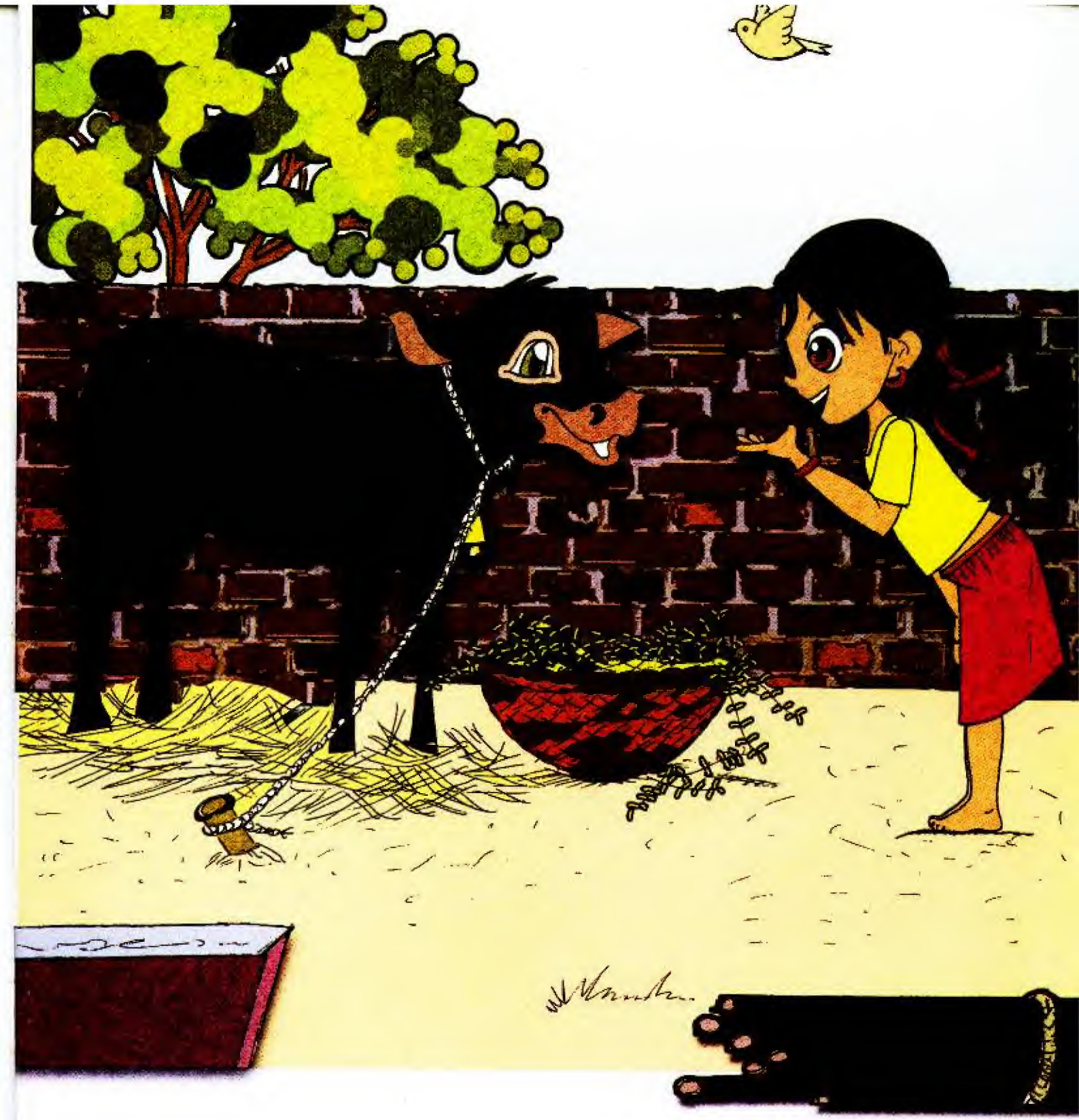

मिनवा की बछड़ी

मिनवा के घर आई बछड़ी
नाम था मंगल गौरी।
सर पर उसके सींग नहीं
तो मिनवा पूछेः क्यों री?

डम्पुआ खाए डांट

डम्पुआ न खाए दोसा चटनी
खाए न फल, न चाट।
खाए तो खाए डम्पुआ अपनी
शैतानी पे डांट!

क्रिकेटर मिनवा

मिनवा क्रिकेट खेल के आए
खोए न अपनी विकट।
जो मिनवा से होड़ लगाए
कटवाए अपनी टिकट!

रोता डम्पुआ

डम्पुआ बैठ बेचारा रोता
कि बने न उससे ड्राईंग
कौवे का जो बन गया तोता
That's why Dumpua was crying!

ऑटो में मिनवा

मिनवा जो बैठी ऑटो में
इतनी वो हुई हैरान।
आँखें भर आई धुएं से
और शोर करे परेशान!

कहे डम्पुआ

जिसको जितना खाना हो
खाने दो न माँ।
क्यों जबरदस्ती करती हो?
जाने दो न माँ!

तालाब में मिनवा

मिनवा गई तालाब में
लगा रही थी डुबकी।
आया जो मेंढक पास में
वो तैर किनारे दुबकी!

आम तोड़े डम्पुआ

डम्पुआ चढ़ गया पेड़ पर
तोड़े कच्चे आम।
आम तोड़ने में डम्पुआ का
सबसे ऊँचा नाम!

बिन बस्ते की मिनवा

मिनवा गई स्कूल
बस्ता गई भूल!
अब होमवर्क रह गया बस्ते में
तो कैसे छूटे सस्ते में?

धूप में डम्पुआ

चले डम्पुआ धूप में
लिये एक हाथ में छतरी।
क्या है दूजे हाथ में?
उसकी फेवरेट काजू कतरी!

साफ़ सुथरी मिनवा

सुबह सवेरे जाग कर
मिनवा करती दातून।
फिर जल्दी से स्नान कर
काटती अपने नाखून।

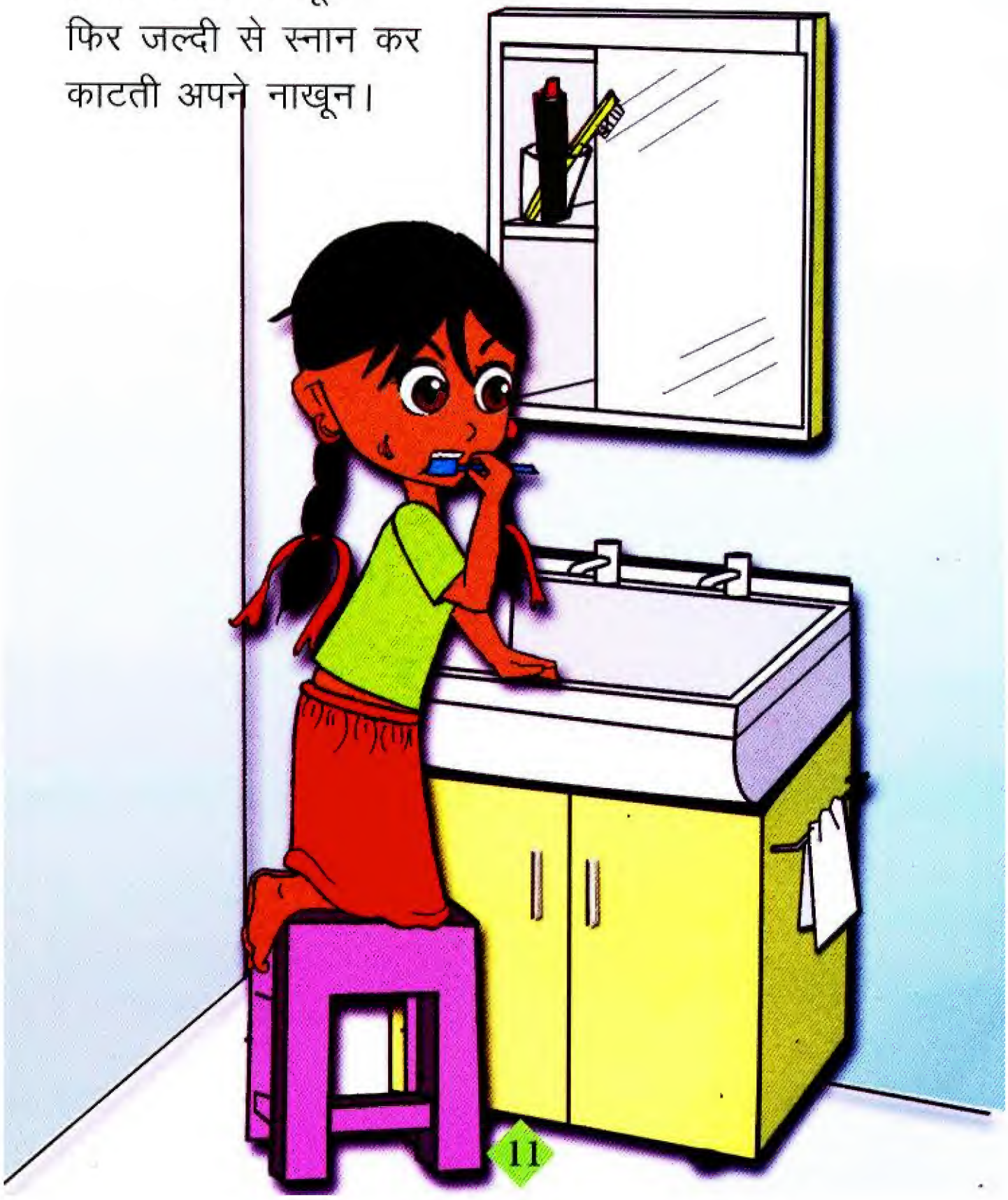

डम्पुआ की मोच

डम्पुआ के पैर में मोच आई
तो उसके मन में ये सोच आई।
आज तो स्कूल न जाऊंगा
घर बैठ पतंग मैं उड़ाऊंगा।

धूप में मिनवा

मिनवा कर रही थी सैर
न सर पे टोपी, नंगें पैर।
सूरज बोला : ओए छोटी
काहे धूप में है तू लौटी?

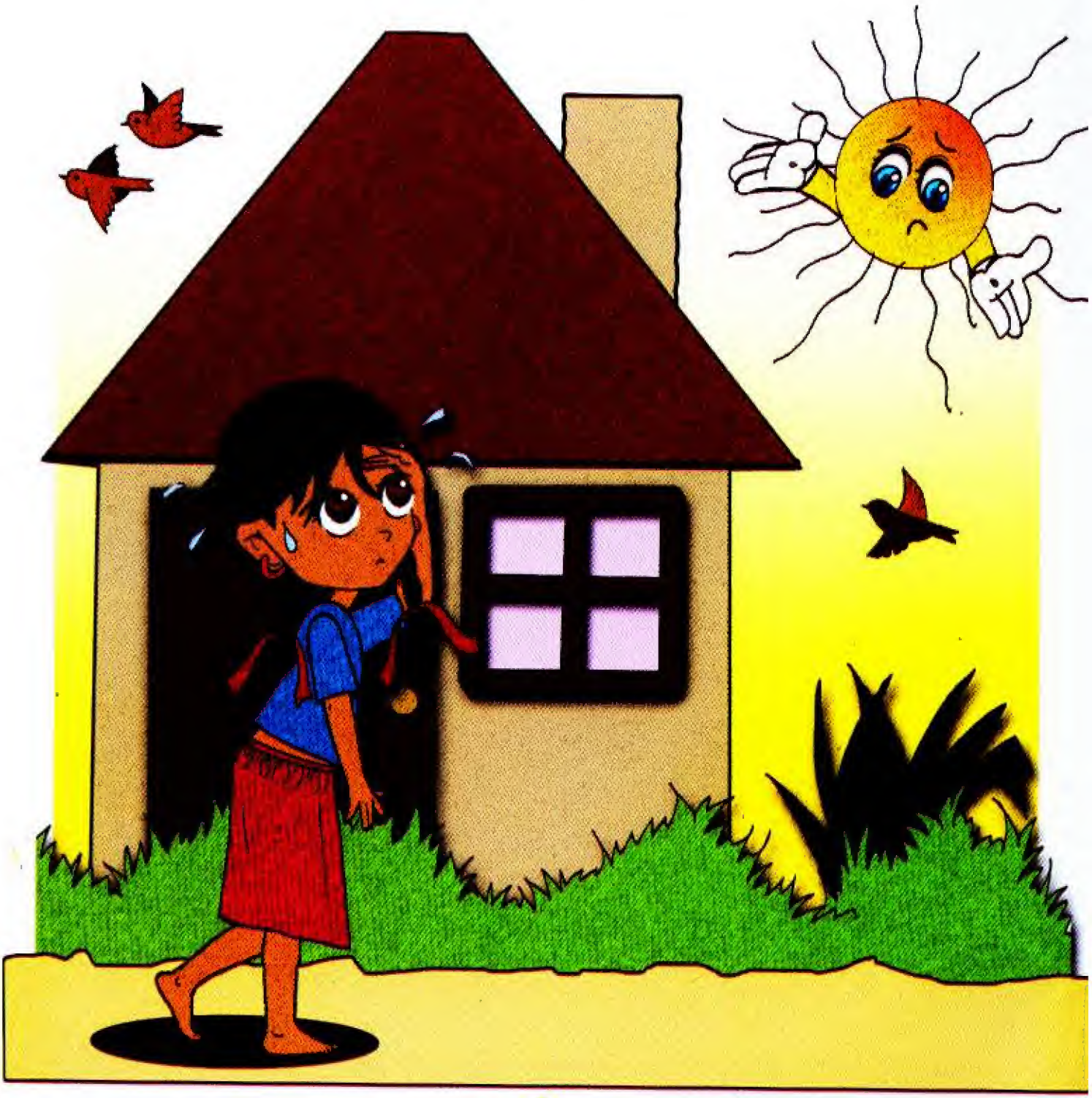

घुड़सवार डम्पुआ

डम्पुआ चढ़ गया घोड़े पर
तो घोड़ा गया बिदक।
डम्पुआ जो गिर गया मेंढक पर
तो मेंढक गया फुदक!

लटकी मिनवा

मिनवा लटक रही टहनी पर
सर नीचे, ऊपर पैर।
ओह! मिनवा करे बहुत शैतानी
अब नहीं उसकी खैर!

डम्पुआ के जूते

डम्पुआ गया बाज़ार को
खरीद के लाया जूते।
अब कैसे जूते पहने वो
जो बंधे न उससे फीते!

पेड़ पे मिनवा

मिनवा जो चढ़ गई पेड़ पे
उतर न पाए वो।
घड़ी दिखाए नौः बजे
तो स्कूल कब जाए वो?

डम्पुआ का प्रश्न

डम्पुआ पूछे: मछली रानी
मुझे इस बात पर हैरानी
तुम सदा पानी में नहाती
फिर तुमसे दुर्गंध क्यों कर आती?

मिनवा के चुभ गया काँटा

मिनवा के चुभ गया काँटा
तो मिनवा ने ऐसा डांटाः
ऊफ! मैं तुम से ऊब गई
जब देखो पाँव में चुभ गई!

छोटा डम्पुआ

बीते दिनों की बात सुनाऊँ
जब डम्पुआ था छोटा।
करता खूब शरारत मगर
वो मन का न था खोटा!

करता जब वो कारिस्तानी
माँ की पीठ के पीछे।
पकड़ा जाता, तो छिप जाता
माँ के आँचल नीचे!

मिनवा और गिलहरी

खिड़की ऊपर मिनवा बैठी
गिलहरी से आँख मिलाती।
ज्यों ज्यों गिलहरी पास में आती
उसको बिस्कुट खिलाती!

"थैंक्यू मिनवा", कहे गिलहरी,
"अब मैं जा रही हूँ।
बच्चों को बिस्कुट खिला कर
वापस आ रही हूँ।"

"मोस्ट वेलकम," बोली मिनवा,
"ज़रूर तुम वापस आना।
जो बच्चों को और भूख लगे
ले जाना मुझसे खाना!"

डम्पुआ का चश्मा

डम्पुआ पहने काला चश्मा
चलता जैसे हीरो।
मैथेमैटिक्स के टेस्ट में
नम्बर आए ज़ीरो!

मम्मी ने चश्मा उठा के
फेंका घर के बाहर।
अगले टेस्ट में डम्पुआ के
नम्बर आए ग्यारह!

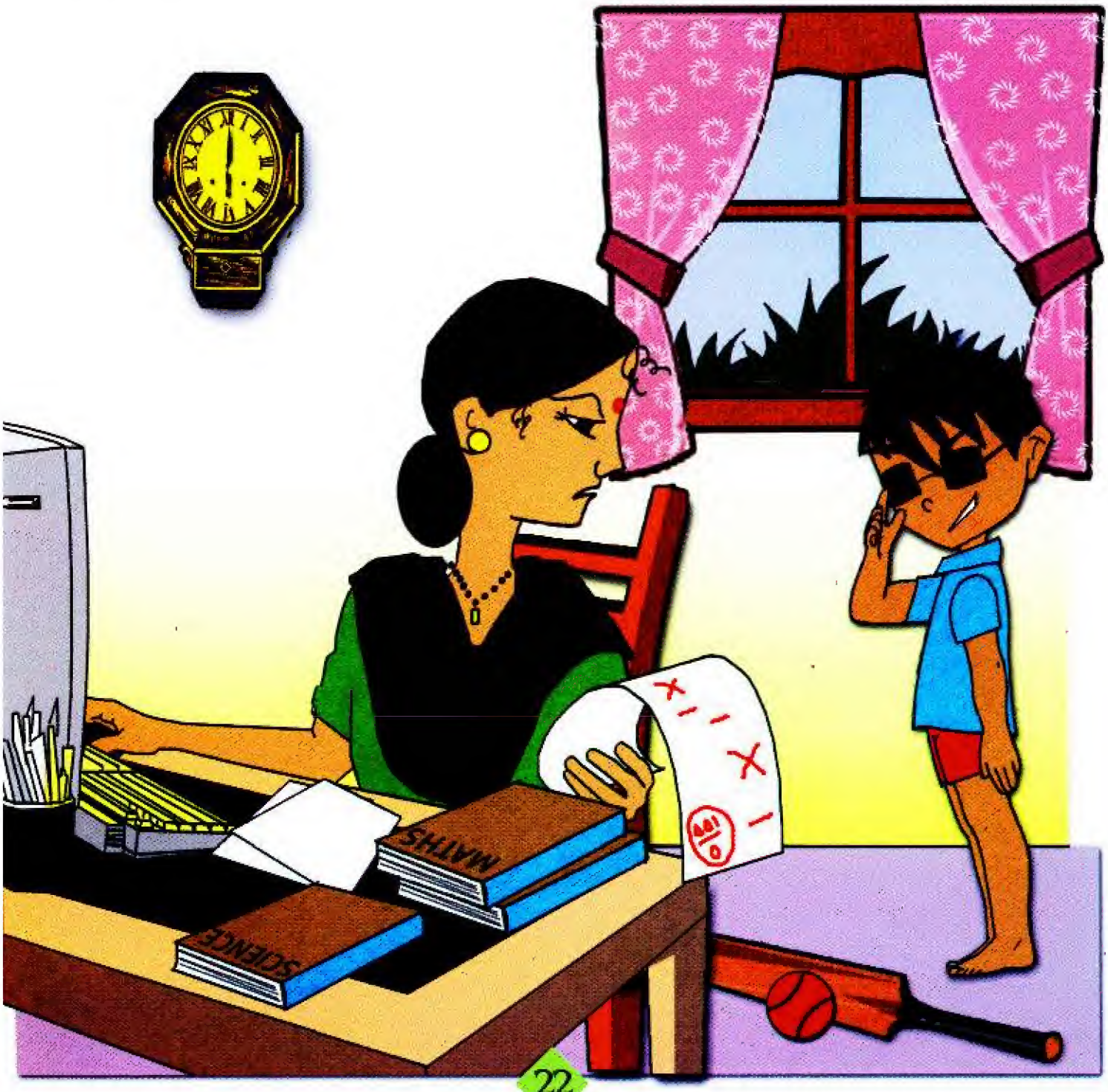

पत्ते पर मिनवा

मिनवा इतनी छोटी थी
एक पत्ते ऊपर बैठी थी।

एक हवा का झोंका आया
मिनवा का पत्ता हिलाया।

मिनवा नीचे गिर पड़ी
फिर न पत्ते पर चढ़ी!

वीर डम्पुआ

हिन्द महासागर के किनारे
सीना ठोक डम्पुआ पुकारे :
ओ सागर, मत कर मनमानी
बन कर सुनामी तूफानी।
वर्ना मैं तुझे सुखा दूंगा
तेरे अहंकार का बदला लूंगा!

लेखक के बारे में

रघुनाथन लगभग दो दशक तक आई आई एम, अहमदाबाद में फाइनेन्स के प्रोफेसर रहे। वे लगभग चार वर्षों तक आई एन जी वैश्य बैंक के अध्यक्ष भी रहे एवं वर्तमान में वे जी एम आर वारालक्ष्मी फांउडेशन के प्रमुख कार्यकारी के पद पर आसीन हैं।

पंजाब एवं जम्मू कश्मीर में जन्मे और पले–बढ़े रघु को अपनी मातृभाषा तमिल से ज्यादा हिन्दी और पंजाबी में प्रवीणता हासिल है। वे "गेम्स इण्डियनस् प्ले" (पेंग्विन 06) के लेखक होने के साथ–साथ कार्टूनिस्ट भी रह चुके हैं। वे कई दैनिक समाचार पत्रों में कॉलम भी लिखते हैं। उन्हें पुराने तालों के संग्रहण का शौक है।

इलस्ट्रेटर के बारे में

रूपालिका का जन्म मुम्बई में हुआ, जबकि पालन–पोषण दिल्ली में। इन्हें फ्रीलांस आर्टिस्ट, ग्राफिक इलस्ट्रेटर एवं ग्राफिक डिजाइनर के तौर पर इस क्षेत्र में सात वर्षों का अनुभव प्राप्त है। इन्होंने पर्यावरण शिक्षा–केन्द्र, अहमदाबाद आई एन जी वैश्य बैंक इत्यादि की कई बड़ी परियोजनाओं पर काम किया है।

इन्होंने टाइम्स ऑफ इण्डिया समूह के साथ एक्जीक्यूटिव इन्फोग्राफर एवं ग्राफिक इलस्ट्रेटर के तौर पर भी कार्य किया है।

roopalika.sre@gmail.com

JUNIOR DIAMOND

X-30, Okhla Industrial Area Phase-II, New Delhi-110020, INDIA
Tel.: 41611861, E-mail: sales@dpb.in
www.juniordiamond.com

CHILDREN'S BOOK 40

ISBN 81-284-0215-3

A.H.W. Sameer Series